

श्रीमद्भागवत स्कन्ध 8 अध्याय 2: गजेन्द्र का संकट

14 September 2026



एक देदीप्यमान पर्वत की तलहटी में स्वर्ण-कमलों से भरे सरोवर में, गजराज को एक बलवान् ग्राह पकड़ लेता है — और सहस्र वर्षों का वह संघर्ष आरम्भ होता है जो तभी समाप्त होगा जब वह महान् गजराज अन्ततः भगवान् की शरण में जाएगा।

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय।

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय।

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय।

श्रीमद्भागवतम् विज्ञम में आपका पुनः स्वागत है — श्रीमद्भागवत महापुराण की पावन कथाओं तथा शिक्षाओं की एक भक्तिपूर्ण यात्रा। अष्टम स्कन्ध के इस द्वितीय अध्याय में श्रीशुकदेव गोस्वामी शास्त्रों की एक सर्वाधिक प्रिय कथा का आरम्भ करते हैं — गजराज गजेन्द्र का संकट, जिसमें उसके समस्त सांसारिक सहारे एक-एक कर छूट जाँएँगे, जब तक कि केवल भगवान् की शरण ही शेष न रह जाए।

अध्याय-परिचय

- शास्त्र: श्रीमद्भागवत महापुराण
- स्कन्ध: 8 (अष्टम स्कन्ध)
- अध्याय: 2 (द्वितीय प्रवचन)

- अध्याय शीर्षक: गजेन्द्र का संकट
- प्रधान वक्ता: श्रीशुकदेव गोस्वामी, राजा परीक्षित को कथा सुनाते हुए — समस्त वृत्तान्त सूत गोस्वामी द्वारा नैमिषारण्य के ऋषियों को कहा गया
- प्रधान श्रोता: राजा परीक्षित
- मुख्य स्थल: क्षीरसागर में स्थित त्रिकूट पर्वत; उसकी ढलानों पर वरुण का उद्यान तथा सरोवर
- केन्द्रीय विषय: ग्राह द्वारा पकड़ा गया गजराज व्यर्थ संघर्ष करता है, जब तक वह परमेश्वर की शरण लेने का संकल्प नहीं कर लेता
- प्रधान श्लोक-सीमा: स्कन्ध 8, अध्याय 2, श्लोक 1-33
- मूल संस्करण: गीता प्रेस श्रीमद्भागवत महापुराण

पूर्व अध्याय का सन्दर्भ

प्रथम प्रवचन में श्रीशुकदेव ने मनुओं की परम्परा तथा प्रत्येक युग में सज्जनों की रक्षा हेतु भगवान् के अवतरण का वर्णन किया, तथा बताया कि चतुर्थ मन्वन्तर में भगवान् श्रीहरि के रूप में प्रकट हुए, “जिनके द्वारा गजराज ग्राह की पकड़ से मुक्त किया गया।” राजा परीक्षित ने उस उद्धार की सम्पूर्ण कथा सुनने की प्रार्थना की, और श्रीशुकदेव, उपवासी राजा की सादर याचना से प्रसन्न होकर, आनन्दपूर्वक कहने लगे — वही प्रतिज्ञा जिसे यह अध्याय अब उठाता है।

क्षीरसागर में देदीप्यमान पर्वत

श्रीशुकदेव विशाल पटल पर दृश्य आरम्भ करते हैं। क्षीरसागर में त्रिकूट नामक एक महान् पर्वत खड़ा है, दस सहस्र योजन ऊँचा, चारों ओर से दुग्ध-सागर से घिरा हुआ। इसकी तीन प्रधान चोटियाँ हैं — एक चाँदी की, एक लोहे की, और एक स्वर्ण की — और अनेक छोटी चोटियाँ रत्नों तथा धातुओं से चमकती, वृक्षों-लताओं से सुशोभित, तथा झरनों के कल-कल संगीत से गुंजित।

श्रीशुक उवाच

आसीद् गिरिवरो राजंस्त्रिकूट इति विश्रुतः ।

क्षीरोदेनावृतः श्रीमान्योजनायुतमुच्छ्रितः ॥ १ ॥

śrī-śuka uvāca āsīd girivaro rājanś trikūṭa iti viśrutaḥ kṣīrodenāvṛtaḥ śrīmān yojanāyutam ucchritaḥ

अर्थ: श्रीशुकदेव ने कहा: हे राजन्! त्रिकूट नामक एक श्रेष्ठ पर्वत था, दस सहस्र योजन ऊँचा, जो चारों ओर से क्षीरसागर से घिरा हुआ था। (स्कन्ध 8, अध्याय 2, श्लोक 1)

उसकी गुफाएँ सिद्धों, गन्धर्वों तथा दिव्य प्राणियों के गान से गुँजती हैं; उसकी घाटियाँ वन्य पशुओं के यूथों को आश्रय देती हैं; और उसके उद्यान पक्षियों के मधुर कूजन से भरे हैं। यहाँ ऐसा स्वर्ग है जो इतना पूर्ण प्रतीत होता है कि लगता है कोई शोक इसे स्पर्श ही नहीं कर सकता — और ठीक यहीं शोक प्रहार करेगा, यह स्मरण कराते हुए कि कोई भी सांसारिक सौन्दर्य, चाहे कितना ही स्वर्गिक क्यों न हो, संकट की पहुँच से परे

नहीं है।



श्रेष्ठ त्रिकूट पर्वत अपने चाँदी, लोहे और सोने के तीन शिखरों सहित देदीप्यमान क्षीरसागर से उठता है, जिसकी ढलानें वनों, झरनों और दिव्य उद्यानों से समृद्ध हैं (श्लोक 1-7)।

श्रेष्ठ पर्वत त्रिकूट अपनी चाँदी, लोहे तथा स्वर्ण की तीन चोटियों के साथ देदीप्यमान क्षीरसागर से उठता है, उसकी ढलानें वनों, झरनों तथा दिव्य उद्यानों से समृद्ध हैं (श्लोक 1-7)।

वरुण का उद्यान और स्वर्ण-कमलों का सरोवर

उस पर्वत की एक घाटी में जल के देवता वरुण का ऋतुमान् नामक एक दिव्य उद्यान है, जो वहाँ विहार करती दिव्य अप्सराओं को प्रिय है। यह चारों ओर सदा पुष्पों तथा फलों से लदे स्वर्गिक वृक्षों से सुशोभित है — आम और पारिजात, चन्दन और अशोक, केला और खजूर तथा सैकड़ों अन्य। इसके मध्य में स्वर्ण-कमलों से जटित एक विशाल सरोवर है, जिसका जल मत्त भ्रमरों के गुंजन से मुखरित, हंसों, चक्रवाकों तथा सारसों से जीवन्त, पराग से सुगन्धित, और सब ऋतुओं के सुरभित पुष्पों से घिरा है।



त्रिकूट की एक घाटी में वरुण का ऋतुमान उद्यान है, और उसमें स्वर्ण-कमलों से ढका एक विशाल सरोवर है, जो हंसों, भौरों और दिव्य पुष्पों की सुगन्ध से भरा है (श्लोक 8-19)।

त्रिकूट की एक घाटी में वरुण का उद्यान ऋतुमान है, और उसमें स्वर्ण-कमलों से ढका एक विशाल सरोवर, जो हंसों, भ्रमरों तथा दिव्य पुष्पों की सुगन्ध से भरा है (श्लोक 8-19)।

गजराज सरोवर पर आता है

इस उद्यान में एक दिन गजयूथ का स्वामी आता है, उस पर्वत-वन का अधिपति, अपने अनेक साथियों के साथ विचरता, बाँस तथा काँटों के झुरमुटों को तोड़ता। वह इतना बलवान् है कि उसकी गन्ध मात्र से सिंह और व्याघ्र, गैंडे और सर्प, तथा प्रसिद्ध शरभ भी भयभीत होकर भाग जाते हैं, जबकि दुर्बल प्राणी उसकी अनुकम्पा से निर्भय विचरते हैं। अपने यूथ तथा उनके बच्चों से घिरा, ताप और तृषा से पीड़ित, वह दूर से ही सरोवर से आती शीतल कमल-सुगन्धित वायु को पाकर उसकी ओर दौड़ता है। जल में उतरकर वह स्नान करता है, स्वच्छ अमृततुल्य जल तृप्ति तक पीता है, और सूँड़ में जल भरकर अपने साथियों तथा उनके बच्चों पर स्नेहपूर्वक छिड़कता है — एक भक्त गृहस्थ के समान अपने यूथ का पालन करता, फिर भी भगवान् की माया से मोहित होकर निकट आते संकट से अनजान।





हाथियों का बलशाली नायक अपने झुंड से घिरा सरोवर में जल पीने और स्नान करने उतरता है, और स्नेहपूर्वक हथिनियों तथा उनके बच्चों पर जल छिड़कता है — निकट आए संकट से अनजान (श्लोक 20-26)।

विशाल गजराज, अपने यूथ से घिरा, जल पीने तथा स्नान करने के लिए सरोवर में उतरता है, और हथिनियों तथा उनके बच्चों पर स्नेहपूर्वक जल छिड़कता है — निकट आते संकट से अनजान (श्लोक 20-26)।

ग्राह की पकड़

तभी, दैव की प्रेरणा से, एक बलवान् ग्राह गजराज को पैर से पकड़ लेता है। वह महान् प्राणी, विधाता की इच्छा से अकस्मात् विपत्ति में पड़कर, अपनी समस्त शक्ति से छूटने के लिए संघर्ष करता है।

तं तत्र कश्चिन्नृप दैवचोदितो
ग्राहो बलीयांश्चरणे रुषाग्रहीत् ।
यदृच्छयैवं व्यसनं गतो गजो
यथाबलं सोऽतिबलो विचक्रमे ॥ २७ ॥

*taṁ tatra kaścīn nṛpa daiva-codito grāho balīyāṁś caraṇe ruṣāgrahīt yadṛcchayaivaṁ vyasanam
gato gajo yathā-balam so 'tibalo vicakrame*

अर्थ: हे राजन्! दैव की व्यवस्था से एक बलवान् ग्राह ने जल में क्रोधपूर्वक गजराज को पैर से पकड़ लिया। इस प्रकार विपत्ति में पड़कर वह बलशाली गज अपनी समस्त शक्ति से छूटने के लिए संघर्ष करने लगा। (स्कन्ध 8, अध्याय 2, श्लोक 27)

हथिनियाँ अपने स्वामी को घसीटे जाते देख असहाय शोक में चीत्कार करती हैं; अन्य गज पूरी शक्ति से उसे पीछे से खींचने का यत्न करते हैं, किन्तु ग्राह की पकड़ ढीली नहीं कर पाते। और इस प्रकार, एक जल से खींचता और दूसरा थल से, गज और ग्राह जूझते रहते हैं — और सहस्र वर्ष बीत जाते हैं, यह संघर्ष इतना विचित्र कि देवता भी विस्मय से देखते हैं।



एक बलशाली ग्राह गजराज का पैर पकड़ लेता है; असहाय झुंड अपने नायक को बचाने का प्रयास करता है पर पकड़ नहीं तोड़ पाता, और लम्बा संघर्ष आरम्भ होता है (श्लोक 27-29)।

एक बलवान् ग्राह गजराज को पैर से पकड़ लेता है; असहाय यूथ अपने स्वामी को बचाने के लिए ज़ोर लगाता है किन्तु पकड़ नहीं तोड़ पाता, और दीर्घ संघर्ष आरम्भ होता है (श्लोक 27-29)।

सहस्र वर्ष, और हृदय का मुड़ना

जैसे-जैसे वर्ष बीतते हैं, सन्तुलन बदलता है। निरन्तर जल में घसीटे जाते, अपने भोजन और बल से दूर, गजराज क्षीण होने लगता है; जबकि ग्राह, जल में घर किए और उसी से पुष्ट, केवल और बलवान् होता जाता है। अन्ततः वह महान् प्राणी — जो सदा शरीर को ही अपना स्व मानता आया था — मृत्यु के सम्मुख आकर स्वयं को पूर्णतः असहाय पाता है। वह दीर्घकाल तक विचार करता है, और एक ऐसे निष्कर्ष पर पहुँचता है जो सब कुछ बदल देता है: उसके सजातीय और साथी, अपने समस्त प्रेम के होते हुए भी, उसे नहीं बचा सकते; और यदि बलशाली गज नहीं बचा सकते, तो हथिनियाँ कैसे? विधाता के फंदे में फँसकर वह संकल्प करता है कि वह भी, एक पशु मात्र होकर, सबकी परम शरण परमेश्वर की ओर रक्षा के लिए दौड़ेगा।

यः कश्चनेशो बलिनोऽन्तकोरगात्
प्रचण्डवेगादभिधावतो भृशम् ।
भीतं प्रपन्नं परिपाति यद्भया-
न्मृत्युः प्रधावत्यरणं तमीमहि ॥ ३३ ॥

*yaḥ kaścaneśo balino 'ntakoragāt pracaṇḍa-vegād abhidhāvato bhṛśam bhītaṁ prapaṇṇaṁ
paripāti yad-bhayaṁ mṛtyuḥ pradhāvaty araṇaṁ tam imahi*

अर्थ: निश्चय ही कोई परमेश्वर है जो शरणागत भयभीत जीव की, प्रचण्ड वेग से दौड़ते आते मृत्यु-रूपी सर्प से रक्षा करते हैं — वही भगवान् जिनके भय से मृत्यु स्वयं भाग जाती है। हम उन्हीं की शरण लें। (स्कन्ध 8, अध्याय 2, श्लोक 33)

इन शब्दों के साथ अध्याय निराशा से आशा की ओर मुड़ता है। गजराज के सांसारिक सहारे सब गिर चुके हैं, और उनके अभाव में एक ही सच्चा आश्रय प्रकट होता है। उसका संकट उसकी प्रार्थना का द्वार बन गया है — वह महान् स्तोत्र जिसे अगला अध्याय खोलेगा।



लम्बे संघर्ष के बाद बल क्षीण होते देख गजराज समझ जाता है कि कोई बन्धु उसे नहीं बचा सकता, और परम भगवान् की, जो समस्त प्राणियों की अन्तिम शरण हैं, शरण लेने का निश्चय करता है (श्लोक 31-33)।

दीर्घ संघर्ष के पश्चात् बल क्षीण होते, गजराज समझ जाता है कि कोई सजातीय उसे नहीं बचा सकता और सबकी परम शरण परमेश्वर की शरण लेने का संकल्प करता है (श्लोक 31-33)।

इस अध्याय की प्रमुख शिक्षाएँ

1. कोई सांसारिक सौन्दर्य या बल संकट की पहुँच से परे नहीं। सबसे बलशाली प्राणी भी, जिसकी गन्ध मात्र से सिंह भाग जाते थे, सरोवर के तट पर बिना किसी चेतावनी के पकड़ लिया जाता है। यह अध्याय पद, शक्ति और सुखद परिवेश पर हमारे विश्वास को धीरे से भेद देता है (श्लोक 20-27)।
2. परिवार और मित्रों की सीमा है। गज का यूथ उससे प्रेम करता है और उसे बचाने के लिए ज़ोर लगाता है, फिर भी नहीं बचा पाता। मानवीय सम्बन्ध बहुमूल्य हैं, किन्तु वे हमें मृत्यु से नहीं बचा सकते; इसे पहचानना ही ज्ञान का आरम्भ है (श्लोक 28, 32)।
3. संकट शरणागति का जन्मस्थल बन सकता है। केवल तब, जब अन्य समस्त आशाएँ समाप्त हो जाती हैं, गजराज भगवान् की ओर मुड़ता है। विपत्ति, कष्टप्रद होते हुए भी, हमारे भ्रमों को छीनकर हमें हमारी सच्ची शरण तक ले जा सकती है (श्लोक 31-33)।

4. एक पशु भी भगवान् की शरण ले सकता है। कि कोई ऋषि या राजा नहीं, वरन् एक पशु इस कथा का नायक बनता है — यह हमें बताता है कि दिव्य शरण का द्वार प्रत्येक जीव के लिए खुला है, चाहे वह कितना ही तुच्छ क्यों न प्रतीत हो। भगवान् पद का नहीं, निष्ठा का उत्तर देते हैं (श्लोक 33)।

5. शरीर के प्रति आसक्ति दुःख को निमन्त्रित करती है। गज सबसे अधिक इसलिए दुःख पाता है क्योंकि वह “शरीर को ही अपना स्व” मानता था। उसका जागरण तब आरम्भ होता है जब वह शरीर से परे उन भगवान् की ओर देखता है जो मरणासन्न की भी शरण हैं (श्लोक 30-31)।

6. यह विपत्ति स्वयं विधाता की कृपा है। श्रीशुकदेव एक ही शक्ति को दो बार नाम देते हैं: “दैव की व्यवस्था से” ग्राह गजराज के पैर को पकड़ता है (श्लोक 27), और “विधाता की इच्छा से” ही गजराज, चिन्तन करते हुए, अपनी विपत्ति को समझता है (श्लोक 32)। जिस मोह ने उसे बिना सचेत हुए जल में उतरने दिया — “भगवान् की माया से मोहित” (श्लोक 26) — वह उसी उच्चतर इच्छा से टूटता है जिसने यह संकट भेजा। सही दृष्टि से देखें तो यह संकट किसी अभागे पशु पर आकस्मिक दुर्भाग्य नहीं है — यह विधाता की अपनी रीति है, जिससे एक अभिमानी आत्मा, चाहे अनिच्छा से ही सही, अपनी एकमात्र सच्ची शरण की ओर लौट आती है। जो विपत्ति प्रतीत होती है, वह वस्तुतः उग्र मुखौटे में कृपा है।

एक भक्तिपूर्ण चिन्तन

उस महान् गजराज का चित्र, जो जल में धीरे-धीरे डूब रहा है जबकि उसका परिवार तट पर असहाय खड़ा है — इसमें कुछ लगभग असह्य, और फिर भी गहराई से सान्त्वनादायक है। यह काल की पकड़ में फँसे प्रत्येक जीव का चित्र है। हम भी एक ऋतु के लिए बलवान् हैं; हम भी प्रेम करने वालों से घिरे हैं; और हम भी एक दिन पाएँगे कि हमारा कोई बल और कोई प्रेम मृत्यु की पकड़ को ढीला नहीं कर सकता। भागवत यह कथा हमें भयभीत करने के लिए नहीं, वरन् दिशा देने के लिए कहता है। गज की महानता कभी उसके दाँतों या यूथ में नहीं थी — वह उस क्षण में थी जब उसने अपनी शर्तों पर संघर्ष करना छोड़ा और उस एक को पुकारा जो मृत्यु से भी बलवान् है। वह पुकार हमें किसी भी क्षण, किसी भी संकट में, जल के चढ़ने से बहुत पहले, उपलब्ध है। हमें सहस्र वर्ष प्रतीक्षा नहीं करनी। जो शरण गज को अपने बल के अन्त में मिली, वही शरण हमारे बल के केन्द्र में मौन प्रतीक्षा कर रही है।

एक दैनिक भक्ति-अभ्यास

आज एक ऐसे सांसारिक सहारे को स्मरण करें जिस पर आप चुपचाप निर्भर रहते हैं — अपना स्वास्थ्य, अपना कार्य, कोई सम्बन्ध, अपनी ही सामर्थ्य — और उसे भगवान् को धीरे से लौटा दें, यह स्वीकार करते हुए कि वही, न कि वह वस्तु, आपकी सच्ची शरण हैं। धीरे से दोहराएँ: “ॐ नमो भगवते वासुदेवाय।” संकट के आने से पूर्व ही गज की खोज को अपनी बना लें: कि परमेश्वर वह एकमात्र शरण हैं जो कभी नहीं छूटती, उनकी भी रक्षक जिनसे प्रत्येक अन्य सहायता गिर चुकी हो।

उपसंहार

अष्टम स्कन्ध का द्वितीय प्रवचन शास्त्र के सबसे कोमल नाटकों में से एक की भूमिका रचता है। त्रिकूट की देदीप्यमान चोटियों तथा वरुण के उद्यान के स्वर्ण-कमल सरोवर से लेकर, गजराज के अकस्मात् पकड़े जाने तथा उसके पश्चात् के दीर्घ, थका देने वाले संघर्ष तक, प्रत्येक दृश्य एक ही क्षण की ओर बढ़ता है: उस महान् प्राणी की यह अनुभूति कि उसकी एकमात्र आशा परमेश्वर हैं। यहाँ भागवत एक पशु के संकट के

माध्यम से वह सार्वभौम सत्य सिखाता है कि समस्त सांसारिक सहारे गिर जाते हैं और केवल भगवान् के प्रति शरणागति ही टिकती है। अब जब गज का हृदय दिव्य की ओर मुड़ चुका है, अगले अध्याय को भरने वाले गजेन्द्र के अमर स्तोत्र की भूमिका तैयार है।

श्रीमद्भागवतम् का दिव्य ज्ञान हमारे हृदयों में शुद्ध भक्ति जाग्रत करे।

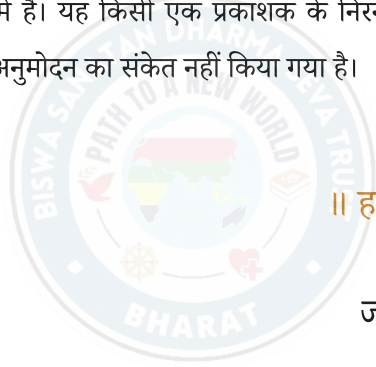
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय।

जय श्री माधव।

सन्दर्भ एवं आभार

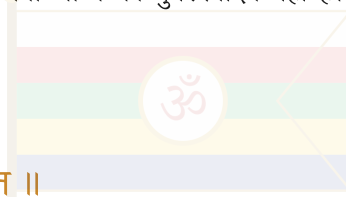
- मूल संस्करण: गीता प्रेस, श्रीमद्भागवत महापुराण (सम्पूर्ण), अष्टम स्कन्ध, द्वितीय प्रवचन, पृष्ठ 738–740।
- शृंखला: श्रीमद्भागवतम् विज़्डम • विश्व सनातन धर्म सेवा ट्रस्ट।
- पण्डित डॉ. श्री काशीनाथ मिश्र के आध्यात्मिक मार्गदर्शन एवं अनुशंसा के अनुरूप प्रस्तुत।

यह लेखक के अपने शब्दों में एक मौलिक, निष्ठापूर्ण पुनर्कथन है, जिसमें संक्षिप्त उद्धृत श्लोक देवनागरी तथा लिप्यन्तरण में दिए गए हैं और उनके अर्थ सारांश-रूप में हैं। यह किसी एक प्रकाशक के निरन्तर अनुवाद अथवा भाष्य का पुनरुत्पादन नहीं है। किसी प्रकाशक से किसी सम्बद्धता अथवा उसके अनुमोदन का संकेत नहीं किया गया है।



॥ हरि ॐ तत्सत् ॥

जय श्री माधव



ऑनलाइन पढ़ें: kalkiabatara.org/hi/blog-srimad-bhagavatam-canto-8-chapter-2-the-elephant-gajendras-crisis-hi.html

श्रीमद्भागवतम् विज़्डम • कल्कि अवतार इंटरनेशनल • बिस्व सनातन धर्म सेवा ट्रस्ट